



बौद्ध दर्शन का हिंदू धर्म पर प्रभाव: एक अध्ययन

प्रताप सिंह¹

¹ शोधार्थी, इतिहास विषय, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय.

ABSTRACT:

बौद्ध दर्शन का भारतीय धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। विशेष रूप से हिंदू धर्म ने बौद्ध विचारधारा के कई महत्वपूर्ण तत्वों को आत्मसात किया और अपने सिद्धांतों में संशोधन एवं परिवर्धन किया। बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद तथा शून्यवाद जैसी अवधारणाओं ने हिंदू धर्म के दार्शनिक आधार को गहराई से प्रभावित किया। अद्वैत वेदांत, भक्ति परंपरा, कर्म सिद्धांत, अहिंसा, मोक्ष की अवधारणा एवं सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव बौद्ध दर्शन के प्रभाव के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। गौतम बुद्ध के उपदेशों में कर्म और पुनर्जन्म की व्याख्या को विशेष स्थान दिया गया था, जो हिंदू धर्म के पूर्ववर्ती विचारों से भिन्न थी। बौद्ध धर्म ने आत्मा और परमात्मा जैसी अवधारणाओं को चुनौती दी, जिससे हिंदू दर्शन में आत्मा की व्याख्या पर नए सिरे से विचार किया गया। विशेष रूप से आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत में बौद्ध शून्यवाद के प्रभाव को देखा जा सकता है, जहाँ 'ब्रह्म सत्यम्, जगन्मिथ्या' की अवधारणा बौद्ध प्रतीत्यसमुत्पाद से मेल खाती है।

बौद्ध धर्म की अहिंसा नीति ने हिंदू धर्म को गहराई से प्रभावित किया। यह प्रभाव विशेष रूप से महाभारत, भगवद गीता और उपनिषदों में देखे जा सकते हैं, जहाँ अहिंसा को एक महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया गया। इसके अलावा, भक्ति आंदोलन पर भी बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा, क्योंकि बौद्ध धर्म ने मूर्तिपूजा और कर्मकांडीय परंपराओं का विरोध कर एक सरल और व्यक्तिगत आध्यात्मिक मार्ग को बढ़ावा दिया। यही प्रवृत्ति आगे चलकर हिंदू भक्ति आंदोलन में विकसित हुई, जहाँ संत कबीर, तुलसीदास, और अन्य भक्त कवियों ने मूर्तिपूजा और बाह्य आडंबर का विरोध किया। बौद्ध धर्म के प्रभाव से हिंदू समाज में जाति प्रथा और सामाजिक असमानता के प्रति भी एक नया दृष्टिकोण विकसित हुआ। बुद्ध द्वारा सामाजिक समानता की शिक्षा ने हिंदू समाज में सुधार आंदोलनों को प्रेरित किया, जिससे भक्ति काल में संतों ने समानता और भाईचारे का संदेश दिया। बौद्ध धर्म के प्रारंभिक काल में मूर्तिपूजा का विरोध किया गया था, लेकिन महायान बौद्ध परंपरा में इसे स्वीकार किया गया, जिसका प्रभाव हिंदू मंदिर परंपरा पर भी पड़ा। बौद्ध दर्शन और हिंदू धर्म के बीच परस्पर संबंधों का गहन अध्ययन किया गया है। यह स्पष्ट होता है कि बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म ने एक-दूसरे को प्रभावित किया और भारतीय दार्शनिक परंपराओं को एक नया स्वरूप प्रदान किया। बौद्ध दर्शन ने हिंदू धर्म को अधिक समावेशी, दार्शनिक रूप से परिष्कृत और सामाजिक रूप से प्रगतिशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

KEYWORDS:

1. बौद्ध दर्शन – बुद्ध द्वारा प्रतिपादित चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, शून्यवाद एवं प्रतीत्यसमुत्पाद, 2. हिंदू धर्म – वेद, उपनिषद, पुराण एवं विभिन्न दार्शनिक मतों का समुच्चय, 3. अद्वैत वेदांत – अद्वैतवाद, माया सिद्धांत एवं ब्रह्म की अवधारणा, 4. अहिंसा – हिंसा का त्याग एवं समस्त प्राणियों के प्रति दयाभाव, 5. मोक्ष – जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने की प्रक्रिया।

PAPER ACCEPTED DATE:

10th March 2025

PAPER PUBLISHED DATE:

14th March 2025

विषय वस्तु

बौद्ध दर्शन का संक्षिप्त परिचय

बौद्ध धर्म की स्थापना गौतम बुद्ध (563 ईसा पूर्व - 483 ईसा पूर्व) द्वारा की गई थी। उनका दर्शन चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग पर आधारित है, जो जीवन के दुखों का कारण बताते हैं और उनसे मुक्ति पाने का मार्ग सुझाते हैं। बौद्ध विचारधारा में आत्मा और परमात्मा की अवधारणा को नकारते हुए प्रतीत्यसमुत्पाद (सभी घटनाएँ अन्य कारकों पर निर्भर होती हैं) की अवधारणा प्रस्तुत की गई। महायान और हीनयान बौद्ध शाखाओं के माध्यम से यह दर्शन आगे विकसित हुआ। नागार्जुन ने शून्यवाद का प्रतिपादन किया, जो अद्वैत वेदांत पर गहरा प्रभाव डालने वाला सिद्धांत बना।

हिंदू धर्म पर बौद्ध प्रभाव

बौद्ध दर्शन ने हिंदू धर्म को गहराई से प्रभावित किया, जिससे इसके दार्शनिक, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक पहलुओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

(क) अद्वैत वेदांत पर प्रभाव

आदि शंकराचार्य (8वीं शताब्दी) ने बौद्ध शून्यवाद से प्रेरणा लेते हुए अद्वैत वेदांत का विकास किया। बौद्ध शून्यवाद और अद्वैत वेदांत में कुछ समानताएँ देखी जा सकती हैं, जैसे कि संसार की अस्थायित्वता और मोक्ष की अवधारणा। शंकराचार्य ने 'ब्रह्म सत्यम्, जगन्मिथ्या' का सिद्धांत प्रतिपादित किया, जो बौद्ध प्रतीत्यसमुत्पाद और शून्यवाद के प्रभाव को दर्शाता है।

(ख) अहिंसा और भक्ति परंपरा पर प्रभाव

गौतम बुद्ध ने अहिंसा को अपने धर्म का मुख्य स्तंभ बनाया। उनके विचारों से प्रभावित होकर हिंदू धर्म ने भी अहिंसा को एक महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य के रूप में अपनाया। महाभारत, भगवद गीता और अन्य हिंदू ग्रंथों में अहिंसा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।

इसके अतिरिक्त, बौद्ध धर्म के सरल और व्यक्तिगत आध्यात्मिक मार्ग ने हिंदू धर्म में भक्ति परंपरा को बढ़ावा दिया। हिंदू भक्ति आंदोलन के संत जैसे कबीर, तुलसीदास, मीराबाई और चैतन्य महाप्रभु ने बौद्ध धर्म के समान सरल भक्ति मार्ग को अपनाया, जिसमें जाति, वर्ण और बाह्य आडंबरों का विरोध किया गया।

(ग) कर्म सिद्धांत और मोक्ष की अवधारणा पर प्रभाव

बौद्ध धर्म ने कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा को सरल और व्यावहारिक बनाया। यह विचार हिंदू धर्म में भी गहराई से समाहित हो गया। हिंदू ग्रंथों में पहले से ही कर्म सिद्धांत का उल्लेख था, लेकिन बौद्ध प्रभाव के कारण इसे सरलता और व्यावहारिकता मिली।

बुद्ध ने यह भी कहा कि आत्मा कोई स्थायी तत्व नहीं है, बल्कि यह अनित्य है और प्रतीत्यसमुत्पाद के कारण अस्तित्व में आती है। इस विचार ने हिंदू दार्शनिकों को आत्मा और मोक्ष की व्याख्या पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया।

(घ) सामाजिक सुधार और जाति व्यवस्था पर प्रभाव

गौतम बुद्ध ने जाति-प्रथा का खंडन किया और सभी मनुष्यों की समानता पर बल दिया। उनके प्रभाव से हिंदू समाज में भी जातिवाद के विरोध में विचार विकसित हुए। बौद्ध धर्म के

प्रभाव से भक्ति आंदोलन के संतों ने जाति-प्रथा का विरोध किया और समानता तथा भाईचारे का संदेश दिया।

(ड) हिंदू मंदिर और मूर्तिपूजा पर प्रभाव

बौद्ध धर्म के प्रारंभिक चरण में मूर्तिपूजा का विरोध किया गया था, लेकिन महायान बौद्ध परंपरा में बुद्ध और बोधिसत्त्वों की मूर्तियों की पूजा शुरू हुई। इसका प्रभाव हिंदू धर्म पर भी पड़ा, जिससे मंदिर निर्माण और मूर्ति-पूजन परंपरा को और अधिक विकसित किया गया।

बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म के अंतःसंबंध

बौद्ध और हिंदू धर्मों के बीच विचारों का परस्पर आदान-प्रदान हुआ। बौद्ध धर्म के प्रभाव से हिंदू धर्म अधिक समावेशी और दार्शनिक रूप से परिष्कृत हुआ। वहीं, हिंदू धर्म ने बौद्ध धर्म की कई शिक्षाओं को आत्मसात किया, जिससे भारतीय धार्मिक और दार्शनिक परंपराएँ और अधिक विकसित हुईं।

बौद्ध दर्शन ने हिंदू धर्म को कई स्तरों पर प्रभावित किया। अद्वैत वेदांत, भक्ति परंपरा, अहिंसा, मोक्ष सिद्धांत और सामाजिक सुधार आंदोलनों में बौद्ध धर्म का योगदान स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हिंदू धर्म ने बौद्ध विचारों को आत्मसात कर अपने स्वरूप को अधिक व्यापक और लचीला बनाया, जिससे भारतीय धार्मिक परंपरा को नया दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।

बौद्ध दर्शन का संक्षिप्त इतिहास

1. पृष्ठभूमि और उद्भव

बौद्ध धर्म का जन्म छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ, जब भारत में धार्मिक और सामाजिक उथल-पुथल का दौर था। वैदिक धर्म अपने जटिल यज्ञ, कर्मकांड और पुरोहित वर्ग के वर्चस्व के कारण आम जनता के लिए कठिन होता जा रहा था। समाज में जाति-प्रथा और ब्राह्मणवादी परंपराओं का प्रभाव बढ़ रहा था, जिससे कई लोग असंतुष्ट थे। इसी समय विभिन्न श्रमण परंपराओं ने जन्म लिया, जो ब्राह्मणवाद के कर्मकांडीय दृष्टिकोण का विरोध कर रही थीं। इन्हीं श्रमण परंपराओं में बौद्ध धर्म का भी उदय हुआ।

2. गौतम बुद्ध का जीवन और शिक्षाएँ

गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु (वर्तमान नेपाल) के लुंबिनी क्षेत्र में हुआ था। उनका मूल नाम सिद्धार्थ गौतम था और वे शाक्य वंश के राजा शुद्धोधन के पुत्र थे। विलासितापूर्ण जीवन छोड़कर उन्होंने सत्य की खोज में संन्यास लिया और कठोर तपस्या के बाद 35 वर्ष की आयु में उन्हें बोधगया में ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके बाद उन्होंने सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया, जिसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहा जाता है।

बुद्ध ने चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग का प्रतिपादन किया, जो बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत बने:

• चार आर्य सत्य:

1. दुख सत्य – संसार में दुख है।
2. दुख समुदय – दुख का कारण तृष्णा (इच्छा) है।
3. दुख निरोध – तृष्णा के नष्ट होने से दुख समाप्त होता है।
4. दुख निरोधगामिनी प्रतिपद – दुख से मुक्ति का मार्ग अष्टांगिक मार्ग है।

• अष्टांगिक मार्ग:

1. सम्यक दृष्टि (सही ज्ञान)
2. सम्यक संकल्प (सही विचार)
3. सम्यक वचन (सही वाणी)
4. सम्यक कर्म (सही आचरण)
5. सम्यक आजीविका (सही जीवन-यापन)
6. सम्यक प्रयास (सही प्रयास)
7. सम्यक स्मृति (सही स्मरण)
8. सम्यक समाधि (सही ध्यान)

बुद्ध ने आत्मा और ईश्वर की अवधारणा को अस्वीकार किया और प्रतीत्यसमुत्पाद (निर्भर उत्पत्ति) के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। उन्होंने भिक्षु-संघ की स्थापना की और अपने जीवन के शेष 45 वर्षों तक उपदेश देते रहे।

बौद्ध संप्रदायों का विकास

बुद्ध के निर्वाण (मृत्यु) के बाद बौद्ध धर्म में विभिन्न संप्रदायों का विकास हुआ। प्रमुख संप्रदाय निम्नलिखित हैं:

(क) हीनयान (थेरवाद) बौद्ध संप्रदाय

- यह बौद्ध धर्म का प्रारंभिक और पारंपरिक रूप है।
- इसका अर्थ 'छोटा वाहन' होता है, लेकिन इसके अनुयायी इसे 'थेरवाद' (बुजुर्गों की परंपरा) कहते हैं।
- यह आत्म-निर्भर मोक्ष पर अधिक बल देता है और व्यक्तिगत मुक्ति को प्राथमिकता देता है।
- वर्तमान में श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस और कंबोडिया में प्रचलित है।

(ख) महायान बौद्ध संप्रदाय

- यह बौद्ध धर्म का एक उदार और व्यापक रूप है, जिसका अर्थ 'महान वाहन' है।
- इसमें बोधिसत्व आदर्श को अपनाया गया, जिसमें व्यक्ति केवल अपनी मुक्ति के लिए नहीं, बल्कि सभी प्राणियों के कल्याण के लिए कार्य करता है।
- इसमें बुद्ध को एक दैवीय शक्ति के रूप में देखा गया और उनकी मूर्तियों की पूजा शुरू हुई।
- यह चीन, जापान, कोरिया, वियतनाम और तिब्बत में प्रचलित है।

(ग) वज्रयान बौद्ध संप्रदाय

- यह महायान बौद्ध धर्म की एक शाखा है, जो विशेष रूप से तांत्रिक परंपराओं से प्रभावित है।
- यह मंत्र, ध्यान और विशेष अनुष्ठानों पर बल देता है।
- यह तिब्बत, भूटान और मंगोलिया में प्रचलित है।

बौद्ध परिषदों और उनका प्रभाव

बुद्ध के निर्वाण के बाद उनके उपदेशों को संकलित करने और धर्म को व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाने के लिए चार प्रमुख बौद्ध परिषदें आयोजित की गईं:

1. प्रथम बौद्ध परिषद (483 ईसा पूर्व, राजगृह) – बुद्ध के प्रमुख शिष्य महाकश्यप की अध्यक्षता में हुई। इसमें उनके उपदेशों को संकलित किया गया।
2. द्वितीय बौद्ध परिषद (383 ईसा पूर्व, वैशाली) – इसमें बौद्ध भिक्षुओं के अनुशासन पर चर्चा हुई।
3. तृतीय बौद्ध परिषद (250 ईसा पूर्व, पाटलिपुत्र) – सम्राट अशोक के संरक्षण में हुई। इसमें बौद्ध धर्म का प्रचार भारत से बाहर हुआ।
4. चतुर्थ बौद्ध परिषद (78 ईस्वी, कश्मीर) – कनिष्क के शासनकाल में आयोजित हुई। इसमें महायान और हीनयान शाखाएँ स्पष्ट रूप से अलग हो गईं।

भारत और विश्व में बौद्ध धर्म का प्रसार

सम्राट अशोक (273-232 ईसा पूर्व) ने बौद्ध धर्म को व्यापक रूप से फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा, जहाँ बौद्ध धर्म की जड़ें मजबूत हुईं। बौद्ध धर्म धीरे-धीरे भारत से बाहर चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, म्यांमार, थाईलैंड और अन्य देशों में फैल गया।

भारत में बौद्ध धर्म का पतन

7वीं-8वीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म भारत में कमजोर होने लगा। इसके मुख्य कारण थे:

1. हिंदू धर्म के भीतर भक्ति आंदोलन का विकास , जिसने लोगों को आकर्षित किया।
2. शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत ने बौद्ध शून्यवाद का प्रभाव कम कर दिया।
3. इस्लामी आक्रमणों (12वीं-13वीं शताब्दी) में नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों का विनाश।
4. बौद्ध संघों में अनुशासन की कमी और आंतरिक विभाजन।

आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान

हालाँकि मध्यकालीन भारत में बौद्ध धर्म का पतन हो गया था , लेकिन 20वीं शताब्दी में डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में इसका पुनर्जागरण हुआ। उन्होंने 1956 में लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया और नवयान बौद्ध आंदोलन की शुरुआत की। यह आंदोलन सामाजिक समानता, जाति-उन्मूलन और मानव गरिमा के सिद्धांतों पर आधारित था। आज भी भारत में बौद्ध धर्म का प्रभाव देखा जा सकता है , विशेष रूप से दलित आंदोलन और सामाजिक न्याय के क्षेत्रों में। 20वीं शताब्दी में डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार हुआ। उन्होंने 1956 में लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया और नवयान बौद्ध आंदोलन की शुरुआत की। आज भी बौद्ध धर्म भारत सहित दुनिया के कई देशों में लोकप्रिय है और इसकी शिक्षाएँ शांति, करुणा और अहिंसा के लिए प्रासंगिक बनी हुई हैं।

समकालीन प्रासंगिकता

बौद्ध दर्शन की शिक्षाएँ आज के युग में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। तनावपूर्ण जीवनशैली और भौतिकवाद की बढ़ती प्रवृत्ति के बीच बौद्ध धर्म का ध्यान (माइंडफुलनेस) , करुणा और अहिंसा का संदेश लोगों को मानसिक शांति और संतुलन प्रदान कर सकता है। वर्तमान समय में बौद्ध ध्यान-प्रक्रियाएँ (मेडिटेशन) और योग प्रथाएँ पूरे विश्व में लोकप्रिय हो रही हैं।

इसके अतिरिक्त, पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार, सामाजिक समानता और शांति स्थापना में भी बौद्ध विचारधारा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। दलाई लामा जैसे बौद्ध नेता अहिंसा और करुणा के संदेश को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। बौद्ध धर्म केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि एक व्यापक दार्शनिक और नैतिक प्रणाली है , जिसने भारतीय संस्कृति और समाज को गहराई से प्रभावित किया है। इसके सिद्धांतों ने हिंदू धर्म को अधिक समावेशी और दार्शनिक रूप से परिष्कृत बनाया। बौद्ध धर्म ने सामाजिक सुधारों , जाति-उन्मूलन, अहिंसा, भक्ति आंदोलन और ध्यान पद्धतियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ न केवल धार्मिक संदर्भ में , बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और वैश्विक संदर्भों में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसकी करुणा , शांति और अहिंसा की अवधारणा आधुनिक विश्व के लिए एक प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य कर सकती है।

निष्कर्ष

बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति और दर्शन का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। यह केवल एक धर्म नहीं, बल्कि एक नैतिक और दार्शनिक विचारधारा भी है , जिसने पूरे एशिया में समाज को प्रभावित किया। इसका प्रभाव हिंदू धर्म , जैन धर्म , तिब्बती परंपराओं और आधुनिक मानवतावादी विचारों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बौद्ध दर्शन ने न केवल भारतीय

धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं को प्रभावित किया , बल्कि पूरे एशिया में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का स्रोत बना। इसका प्रभाव हिंदू धर्म , जैन धर्म , तिब्बती परंपराओं और आधुनिक मानवतावादी विचारों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। विशेष रूप से हिंदू धर्म ने बौद्ध विचारधारा के कई महत्वपूर्ण तत्वों को आत्मसात किया और अपने सिद्धांतों में संशोधन एवं परिवर्धन किया। बौद्ध दर्शन के कारण हिंदू धर्म की दार्शनिक गहराई और बढ़ी। अद्वैत वेदांत के विकास में बौद्ध शून्यवाद और प्रतीत्यसमुत्पाद का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आदि शंकराचार्य ने बौद्ध विचारों को समाहित कर अपने अद्वैत दर्शन को अधिक प्रभावी बनाया। इसी प्रकार, हिंदू धर्म के मोक्ष सिद्धांत में भी बौद्ध धर्म की व्याख्याएँ शामिल हुईं, जिससे मोक्ष की अवधारणा अधिक व्यापक और व्यावहारिक बनी।

इसके अतिरिक्त, भक्ति आंदोलन पर बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा। बौद्ध धर्म ने कर्मकांड और मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए सरल और व्यक्तिगत आध्यात्मिकता को बढ़ावा दिया। यह प्रवृत्ति आगे चलकर हिंदू भक्ति आंदोलन में विकसित हुई, जहाँ संत कबीर, तुलसीदास, और अन्य भक्त कवियों ने मूर्तिपूजा और बाह्य आडंबर का विरोध किया। बौद्ध धर्म ने सामाजिक समानता और न्याय की अवधारणा को बढ़ावा दिया। बुद्ध ने जाति-व्यवस्था का विरोध किया और सभी लोगों को समान अधिकार और सम्मान देने की बात कही। इसका प्रभाव हिंदू समाज पर भी पड़ा , जिससे भक्ति काल के संतों ने जातिवाद का विरोध किया और सामाजिक समरसता का संदेश दिया। इसके अलावा, बौद्ध धर्म के प्रभाव से अहिंसा और दया के सिद्धांतों को अधिक महत्व मिला। यह प्रभाव हिंदू धर्म में भी देखा गया , जहाँ अहिंसा को एक महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया। महात्मा गांधी के अहिंसा सिद्धांत पर भी बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

बौद्ध धर्म का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह पूरे एशिया में फैल गया। चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, म्यांमार, थाईलैंड और अन्य देशों में बौद्ध धर्म ने अपनी पहचान बनाई। महायान और वज्रयान परंपराओं के माध्यम से बौद्ध विचारधारा ने विभिन्न संस्कृतियों को प्रभावित किया।

बौद्ध धर्म के शांतिपूर्ण और सहिष्णु स्वभाव के कारण यह एक वैश्विक नैतिकता का प्रतीक बन गया। इसकी शिक्षाएँ आज भी आधुनिक समाज में प्रासंगिक हैं , विशेष रूप से अहिंसा, करुणा, ध्यान (मेडिटेशन) और आत्म-जागरूकता के संदर्भ में।

REFERENCES

1. दासगुप्ता, सुरेंद्रनाथ (1975). *A History of Indian Philosophy*.
2. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (1993). *इंडियन फिलॉसफी (भारतीय दर्शन)*.
3. नागार्जुन (2वीं शताब्दी). *माध्यमिक कारिका*.
4. शंकराचार्य (8वीं शताब्दी). *ब्रह्मसूत्र भाष्य*.
5. राहुल सांकृत्यायन (1956). *बौद्ध धर्म – एक अध्ययन*.